

२७

ॐ ज्ञानविज्ञानवेदान्तसूताग्रन्थे

नौपल्लव भाष्य

ASHA ARCHIVES

3511

॥ श्री ॥ वे ॥
॥ १ ॥

हरि ॐ आत्मानमिति ॥ योऽंसाररूपी ॥ प्रपंचसमुद्रकानाथमा ॥ समर्थभयाका ॥ यसापरमात्मा
रूपी ॥ ॐ कारकनजौना गुरुकाक्षपाले ॥ गरिसहजै जान्दु ॥ उसावेदचरित्रभयाका ॥ शंकरस्वरूपी
गुरुलाई नमस्कार गर्नु भनि ॥ पहिले ॥ मंजुलाचरराश्लोकका ॥ यदलाई ॥ सअम्वगीरनामा योगी
जो दुसो ॥ नमस्कार गर्नु ॥ १ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ हरि ॐ आत्मानमंजसावेति प्रपंचोपरमं शिवं ॥ यच्चरित्रं
श्रुतिर्वेदेतमहं शंकरं गुरुम् ॥ १ ॥ फलश्रुतये तैत्तरीयके ॥ ॐ ब्रह्मविदा
मेति परम् ॥ २ ॥

फलश्रुतयः ॥ अवयवां ह्यं प्रान्तः शानिहृदलाई ॥ शानमाचित्तलागोस्मन्नानिमित्त ॥ फलार्थभयाका ॥
श्रुतिहृदमा ॥ प्रथम ॥ तैत्तरीयके ॥ वेदशाखाले कहि रक्कन ॥ कः ॥ ॐ काररूपी परमात्मा ब्रह्मजान्या ॥ प्रा
प्तातः ॥ उत्तमस्थानमा प्राप्नुवन् ॥ १ ॥ मुराउके ॥ फेरिसोही दखान् ॥ मुराउको नामा ॥ उपनिषातले
कहीन्दु ॥ कः ॥

॥ त ॥
॥ १ ॥

उत्साव्रह्मजात्याज्ञानितः ब्रह्मेस्वरूपहे भनिकहीन्दु जीवकहीदेनः ॥३॥ तरतीति ॥ ब्रह्मस्वरूपहे
ईक्याहुन्दु भनिभनौलातः योपुरुषजो कः सोकदेविपनिः पापदेविमुक्त होईकनः अतकरराको
धंदेह रूपी ग्रंथिपनिमुक्त होईकनः अमृततत्व होईजान्द केरिव ॥४॥ अथ्यारोह इति ॥

री
मुराउके ब्रह्मविदुह्मे भवतिः ॥३॥ तरतिप्रोक्तं तरतिपाप्मानं गुहाग्रंथिभ्यो
विमुक्तो मृतो भवति ॥४॥ अथ्यारोह श्रुतयः तैत्तयके यतो वा ईमारिा भूता
निजायस्ये यनजातानि जिवन्ति यत्रायांति समभि विधांति तद्वीजीशाशवतदुह्मेति ॥

तिब्रह्मकलाह भन्या ईच्छा भयाकाज्ञाति कनः कहीन्या श्रुतिहृत्सा तैत्तरीयवाधालेकही
न्दुः कः जौन आत्मास्वरूप उने ब्रह्मदेविः ईसंपूर्ण भूतः प्राणिउतपन्न होईरहन्द ॥ उने माजी ईः र
त्माकाहुन्दु ॥ पुनपेरि ॥ सोहीमालीनपनिहुन्दु ॥ यसाव्रह्मला ईजान्याब्रह्मेहुन्दु जीवहोईतर ॥

ॐ

॥ श्री ॥
॥ व ॥
॥ न ॥

सो कामेति ॥ तिव्रह्मजात्यां कामा को कर्मणि मनोलात ॥ आफे कर्मको केन ॥ कथो मन्या जो
जीवात्मा हो ॥ सोही परमात्मा ॥ ब्रह्म हो अर्को केन ॥ उनै ब्रह्म जो कन एक लोम ॥ ठेरे हु मन्या ईका
हु देमा ॥ तां हां सृष्टि कारण भयाका ॥ ब्रह्मा उत्पन्न हु दा भया ॥ तिनै ब्रह्मा जो कसे ॥ उनै परमात्मा
ब्रह्मका ॥ तप गदीन यो संकरी चराचर ॥ लोकालोक वना उतामाका ॥ समर्थ का हु दा भयाका कन ॥ ६ ॥
सो काम यत यको हुं वस्या प्रजापति सत यो तप्यत ॥ सत ये स प्राई दं धाव स
सृजत ॥ ६ ॥ सत देको आत्मा वाई दे मे वाग्र अशित्नाय किं च स वेत ॥ सईश्व
तलोकान्या नु सृजत इति सईमान् लोकान् सृजत ॥ ७ ॥

इतरेति ॥ तव तिनै परमात्मा ब्रह्मले ॥ तिनै लोकालोक चराचर वना उता ब्रह्मा कन र ॥ यो
लोकालोक चरला ई दे दा भया ॥ तव तिव्रह्मा जो कसे ॥ यो लोकालोक संकरी प्रां सार च ॥ त ॥
राचर कन ॥ वारम्बार ॥ वना उतामा ॥ समर्थ ॥ भयाका ॥ हुन्कन ॥ ७ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ २ ॥

कन्दो गे ॥ पुन ईवा क्वा कन्दो गता मा उपनिषत्ते पत्रिक ही न्दु श्रुत ॥ क ॥ यो ही अ द्वैत शुद्धात्मा
 ईश्वर पति आक्रे ई च्छाले गरि ॥ तपरा सील भया काजी वात्मा जला हुदा भया का हुन्दर ॥ ८ ॥
 मुरातु के ॥ तिय क ईश्वर का पति ॥ अनेक कष्टो गरि भया भंन्या पां का मा ॥ मुरातु के पति प्र
 ले गरि क ही न्दु श्रुत ॥ क ॥ जलै वल्दा अग्नि देषि विष्णु ली ग क्रि ल्का उठ त कर ॥ तलै रिता ले
 कान्दो गे ॥ सदेव ॥ सोम्ये दमग्र आशि देक मे वाही तियं सन ॥ भुवा सोम्य मा
 प्रजा प्रामा पत ॥ नाया दा प्रतिष्ठा ॥ ९ ॥ मुरातु के ॥ यथा सु प्रात्याव का द्वि स्फु ली
 गा ॥ सह अस ॥ प्रभवन्ते सो ह्या तथा क्षरा द्वि विधा ॥ सोम्य भवा प्रजा प्रजा यन्त
 व चैवापि इति ॥ यंत त्मा जायन्ते प्राणे मन ॥ सर्वे द्री यानि च ॥ एवं वायु र्योति राय श्रु द्ध्वी
 आत्मा ईश्वर देषि न्या ति ॥ इ क्रि ल्के रुयी अनेक ई जीव समुह पति यो क्रि ल्के ॥ रुयी हो ई कन नित्कीर
 हुन्दर फेरि ॥ तं ही जय हुन्दर ॥ अमृत् स्थल छैन ॥ ती ईश्वर देषि यक आत्मा ॥ यक परमात्मा तिने दु ई क्षरा
 क्षर क हा उ कर ॥ तिने देषि प्राण मन ईन्द्रिय भया का कर ॥ तिने देषि आकाश वायु ज्योति जल ॥ यो वि श्व धार

राग रागी पथी यो संपूर्ण तिने ईश्वर देखि छयन ॥
 छत आका की देखि हुन्दर ॥ ८ ॥

॥ श्री ॥ तैत्तिरीयके ॥ पुनर्देहि ॥ आं हं ॥ तैत्तिरीयके ॥ तामाशाखा लेपनि उयके को ॥ यो अनेक हो रत्ना को कम नि
 ॥ वे ॥ कही रुशुन क ॥ उने ईश्वर ले ॥ यो संकरी चरा चरा ॥ उत्पन्न गरे ॥ आकुपनि उसे मा ॥ लक्ष्म रूप ले गरि ॥
 ॥ ३ ॥ तैमा धुमिर ह्या को रुक् ॥ अत के नर ॥ १० ॥ वृहदारण्यके ॥ सो ही पां के त मां हं वृहदारण्य के तामा वे द

तैत्तिरीयके ॥ तत्त्व आन देवानु प्र विसर ॥ १० ॥ वृहदारण्यके ॥ यः
 पृथिव्यान्ती अति पृथिव्या ॥ मन्त्रो यः पृथिवी न व द य स्य प
 थिवी शरीर य पृथिवी मन्त्रो य मे ति इति ॥ ११ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

शाखा ले करु रुक् अत क ॥ ओं ईश्वर जो रु सो ॥ यो पृथ्वी मा अन्तर्यामि श्व रूप ले र ह्या का त ॥ ई पृथ्वी
 पनित जा न्दि नर ॥ तव ति अन्तर्यामि स्वरूप ले र ह्या का आत्मा ला ई को जान्द रु म नि भ नौ ला त ॥ आ
 त्मा द सि जो रु सो ॥ उने मात्र ॥ उपमाले गरि अनुभव गरि गा उद रु आ की ले जा दे नर ॥ ११ ॥ ॐ ॥

॥ त ॥
 ॥ ३ ॥

अत इति ॥ उक्षरक्षराकाविवेकगदीका। ब्रामहेमा। गर्गचार्येनामा। ऋषिकल्लु सुनः कः।
प्रथमसूर्ये। सूर्येदेवि चन्द्रमा। तिनितुईको। मध्यत्राकाप्रा। योपधिने संयोगहोईयाको। यो
संफुरा अराउगो। न कहिन्। ईकानि अनायके ईश्वरमात्रक अर्को आधारके ही केन ॥ १२ ॥ कोषि

यतस्मदी अक्षरस्य सापानेगर्गि ॥ सूर्य चन्द्रमसौ घावापथीयो वीक्षते
त्यरात्रत ॥ १२ ॥ कोषितके ॥ यषयवसाधुपुंसस्य कर्मकार इति तन्मराप्य
लोक्यभ्ये उन्निनियते ॥ १३ ॥

तके ॥ सोही सिध्दात्त थां हं कोषितकेनामा ॥ उपनिषत्ने गरिकं ही रु सुनः कः ॥ उपरमेश्वर जो कत्सो ॥
यो अराउगो न विधे ॥ प्रवेशा गरेर ॥ यो निवासा पुरुष हकन ॥ इताना कर्म गरा उदाहदा ॥ आयु ईश्वर
पनि कर्म भागी जसा देवि यका हुन्त ॥ कर्म भागी को हुन्त भन्या ॥ मनुष्य मात्र हु अह जीव कर्म भाहु

देवतः तव मुमुषु हल्ले कर्म वडि यात्रा गो

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ४ ॥

मन्या उमो गच्छन् (उतै मनुष्य हह अने कया पादिक म गच्छन् राये म राजा का लोक मा प्रपु ह्मन् ॥ ३ ॥
नै मनुष्ये आप्ता कर्मा अनुष्ठा रने गरि यो संफुली लोक पा लादि धी पति ईश्वर पति कह ईच्छन् अह क
हि देन न ॥ १३ ॥ मा दु ग्ये पुन फेरि मा दु ग्ये यना मा वे द शा पा ले पति सो ही सिद्ध न गच्छन् क

एष एव साधु कर्म पापं वा कर इति तौ यम द्यो नित्य ते एष लोक पा जं ए
षं लोका धी पति रेव सर्वे श्वरः ॥ १३ ॥ मा दु ग्ये एष सर्व
शा एष सर्वे श्वर रेवो तर्था म्ये यानि शर्व स्य एष एवेति ॥ १४ ॥

त्यो को हो मनि मनो लात जो त यो संफुली का अन्तः कर ता मा जीवात्मा हो ई कत र ह्या का हु सो ही सर्व त क
हा उछ सो ही संफुली का ईश्वर पति कह ईच्छः सो ही संफुली का अन्त र्था मि हो ई या का हु ह्मन् सो
ही संफुली का कार ता त्व ह्य का यो नि कह ई रहि या का हु अ को अ धार को हि कै त न ॥ १४ ॥

॥ त ॥
॥ ४ ॥

कन्दोगे ॥ पुनलोही ईश्वर वस्त्रं चरुपी सुखवनाय र वसाभया का कनति ॥ योवात कन्दोगे नामावेदया
खाले गरिकही स्वश्रुत क ॥ उयके यनि जीवर पारीर भन्या भेदमा ॥ साक्षि रूप ले गरि ॥ तिन प्रकार होई
रही या का कन्दोर ॥ पुन जीवर ॥ आत्मात यो पारीर रूपी वर ॥ वनाय र ॥ तसे मा प्रवेश गरि ॥ नाम रूप कन ॥ प्र
ख्याद गदी भया का कन्दोर ॥ १५ ॥ नसिंहता पनिय ॥ पुनलोही वाक्या ॥ नसिंहता पनिय बतले गरिकही स्व

कन्दोगे ॥ सेयं देवते माति श्री देवता ॥ तेन जीवे वात्मानु प्रविश्य नाम रूपे व्याकरोत् ॥
१५ ॥ नसिंहता पनिय ॥ स एवा एष भूतानीन्द्रियाणि विसर्जं देवता कोशा का
रवत् प्रविश्ये व्यव हरन् मुळो मु ढवन् तेषाये व ॥ १६ ॥ ७

क ॥ तिकही या का आत्मा जो क सो ॥ ईभूत प्रणि चराचर ॥ मा पुन ईन्द्रिय हरु माना ना कोशा संपूर्ण भरतार
मा पति ॥ आकृ अंसा अंसा रूप ले ॥ तत्तत् देवता वनिता हीता ही ॥ वसी तत्तत् संपूर्ण व्यवहारा दिगती मा अति चतु
रो भया का कदा ॥ माया ले गरि ॥ मुळ शंसारि बद्ध ॥ चितो भन्या ज्ञाता पति ॥ जने होई र ह्या का कन्दोर ॥ अर्को केतन ॥ १६ ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ५ ॥

श्वेताश्वेतरीयः ॥ सोहीवाक्कासिध्दान्तः ॥ श्वेताश्वेतरीयतामा उपनिषत्तले गरिः ॥ केरिकहीन्कः ॥ सुनः ॥ कः ॥ तिकही
काआमातः ॥ आफैमाया मयं जस्ता होईयाकापनिहृन् ॥ पुनआफैमायाले गरिः ॥ योजगत्कनवनायरः ॥ तसेमाः
मानुअर्कोजीवहोचितोभन्यारुयीः ॥ पोविचित्ररचनागरिरहीयाका ॥ हृन्कः ॥ १७ ॥ मायातिः ॥ अवमाया
भन्याकिजोखसोः प्रकृतिहोः ॥ तिमायाकिः ॥ मालिकतः ॥ महेश्वरहृन् ॥ तिने दुईकाअंसाअंसले गरिः ॥ ईजीवहृन्

श्वेताश्वेतरीयकेः ॥ अस्मात्मायि श्रुजतेतमस्मिचान्योजीवमायायासन्नीहृन् ॥
१७ ॥ मायातुप्रकृतिविद्याः ॥ माईननुमहेश्वरं ॥ अस्यवयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमि
दं जगत् ॥ १८ ॥ नृसिंहतापनियेः ॥ मायाचतमोरूपाः ॥ भूतस्तु देवजतं मोहात्माकमन्

संपूर्णोत्पादहृन्कः ॥ तवतिनेजीवहृन्कले गरिः ॥ योजगत्संकर्तासंघारव्याप्तहोईरह्याकोहृन्कः ॥ १८ ॥
नृसिंहतापनियः ॥ पुनसोहीवाक्कासिध्दान्तः ॥ नृसिंहतापनिबहोले गरिः ॥ कहीन्कः ॥ अतः ॥ कः ॥ पोमायाजो
खसोतः ॥ अतितामसरूपहोईरयाकिः ॥ अतिमोहात्मास्वरूपिभन्याकीः ॥ अतिः ॥ अतिपनिअतितुन्कः ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ५ ॥

॥ त ॥
॥ ५ ॥

पुनः योऽस्ति कर्मनिजान्याशानिजनकनतः। तिकेहीगर्तीकोसमर्थहुदैतः। शंसारिमुठजनहकनतः। आ
प्रवसमाराधेरः। दुष्टात्माकः। चित्तौमन्याकयीगरिराण्याकिहुन्दे॥१८॥ अपवादश्रुतयः॥ योअने
कप्रपंचकोवाधागर्त्याश्रुतिहहमा। आदहन्देगेतामा। उपनिशालेगरिकहीन्दुश्रनः। कः। योसंपू
र्णचराचरजोहसे। निश्चयलेगरिवृत्तेहो। अर्कोहोइतः। तिवृत्तवस्तुतः। केवलआत्माशब्दलेमात्र
कमिदंस्वरूपः। मस्यावेजीकामित्यनंवीत्यापिमुठेरातेवदुष्टा॥१९॥ अव
वादश्रुतयः। हन्देगे॥ सखलीदं वृत्तआत्मेवदंसर्वः॥२०॥ मुराउकेपि॥ वृत्ते
अवेदममृतपुरसातवृत्तयश्चातवृत्तदक्षिराप्रोत्तरेअधश्चोर्ध्वप्रश्रीतं॥
गाईन्दुः। अर्कोहपलेगाईदैतः॥२०॥ मुराउकेपि॥ योवाक्यात्रांन्याशपच्यतिमापनिः। पुनऔरऔ
अचायेहहलेपनिसे। हीवाक्यासिद्धतगरिं गथाकाकरः। कः। योसंपूर्णवृत्तेहो। अर्कोहो
इतः। योवृत्तेहो। मनिजान्याजोतिहसे। सवेतः। अमृततत्वोहोइजान्दुनः। तवतिवृत्तकांहां। मस्याशं
कामा। कर्वपनि। उतरपनि। दक्षितपनि। पश्चीमपनि। संपूर्णवृत्तेहसे। पुनउयोः। उभोसंपूर्णके

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ६ ॥

जाईरह्याका उयके वृत्तमात्र कर। तव यो वित्त्व संसार जग जो कवरि अवलवलवान् रुभनि को ही जा
 नैत न॥ २१॥ मार्कटोय॥ पुन सो ही वाक्या॥ मार्कटोय उवनि॥ पत्मापनि कहि न्दु सुत॥ क॥ यो चरा
 चर जो क॥ सो संदरी वृत्ते मय क अर्को के ही दैत॥ २२॥ ऋष वेद ता पुरुष॥ शुक्ल सापनि सो ही वा
 क्य सिध्या न गरि न्दु अन॥ क॥ यो संदरी उने परमात्मा पुरुष ले गरि व्यापीत गरि राव्या को क॥ दो श्रो

ब्रह्मेवेदंवी०चमिदंकारीळं॥२१॥मार्कण्डे॥सर्वल्येतद्ब्रह्म॥२२॥ऋषये
वेदपुत्रशुक्लेपुरुषयवेदंशावं॥२३॥सुरादुक्तेपुरुषसेवेदं०सर्वयदभूतआत्मा॥२४॥

वस्तुकेहीकैत॥२३॥मराडुके॥पुनसाहीवाक्य॥मुराडुकेतामाउपनिषत्मापनिकहीन्क॥अन॥क॥
येजगसंसारजोहसेउत्रेपरमात्मापुरुषमयमात्रक॥आर्कोकेहीकैत॥तिपुहृषलत॥आत्मा
प्रबलेमत्रव्यवहारगरिकहीन्क॥अहशब्दलेकहीदेतकहीदेत॥२४॥

तैत्तरीयके ॥ पुन सोही वाक्य मा तैत्तरीय वेदशाखले गरि कहिन्छ ॥ अतः कः सत्यज्ञानमयः अनन्त स्वरूप
होई रक्षाको जो छ सो ॥ उनै यकै परमात्मा ब्रह्म कह्न अर्को कैत ॥ २५ ॥ रह दूर रायके ॥ पुन सोही वाक्य सि
ध्दान्त रह दूर राय नामा उपनिषदले गरि कहिन्छ ॥ अतः कः जौन जौन ज्ञान गाई विशेषज्ञान भन्दछ सो
ही ज्ञान जो हो ॥ सोही ब्रह्म हो ॥ सोही ज्ञानमय ब्रह्म जो छ सो ॥ कर्ता गरि ॥ कर्तृपति ॥ यश्चि मयनि ॥ उतरपनि ॥

तैत्तरीयके ॥ सत्तज्ञानमनन्त ब्रह्म ॥ २५ ॥ रह दूर रायके ॥ विज्ञानमा नन्द
म ब्रह्मतदेवता ब्रह्म कर्तृपरमनन्तर वाच्या ॥ २६ ॥ श्वेताश्वेत्तरीयके ॥
निष्कलं निष्क्रीय शान्तं निरवयं च निरञ्जनम् ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दक्षीणायनिः भित्रवाहीरः सर्वत्रमावाक्यरूपले गरि रक्षाका उनै परमात्मा ब्रह्म कह्न अर्को कैत ॥ २६ ॥
श्वेताश्वेत्तरीयके ॥ पुन सोही वाक्य सिध्दान्त निमित्त ॥ श्वेताश्वेत्तरीय नामा उपनिषदले कहिन्छ ॥ अतः कः
ति आत्मा ताराय राप्रभु जो छ सो ॥ कर्ता स्वरूपले ॥ सदा सर्वदा शर्वत्रमा अकिन्त स्वरूपले रक्षाका हुन्छ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ १ ॥

पुनर्तिकलाहमनिभनौलातः क्रियादिपति केहीनभयाकाहुनाले अतिशान्तस्वरूपभयाकाः पुनर्तिक
कलाः नितः अनितः केहीनभयाकाहुनाले मलादिमायाले रहीतहोईकनः निरन्तरनयाकाः पुनर्तिक
ला अमृततत्त्वहोईकनः यके प्रोतुसाधुस्वरूपभयाकाः पुनर्तिकलाः अतिशान्तप्रकाशस्वरूपहोई
याकाजोहोउनेपरमात्मा आत्माहुअकीहोईत ॥ २१ ॥ नसिंहतापरायतदास ॥ पुनलोहीवाक्यमात्र
अमृतस्यपरश्वेतुंदुग्धधननिवाहराः ॥ २१ ॥ नसिंहतापनियः ॥ तद्व
त्तद्वयंरुहत्यानित्र्यशुध्यः बुध्यः मुक्तशत्रुस्सूक्ष्मपरिफर्णमद्वयंस
दानदचित्मात्रमात्रमेव व्यवहार्यः ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सिंहतामनियमले गरिकहीनशुनः कः तिकहीयाकाव्रजोहोईसो अद्वैतकरचउविशालहुना
लेकेवलानित्येशुध्यकरः सत्यमुक्तस्वरूपिकरः सर्वत्रमाअतिसूक्ष्मरूपले व्यपककरः तवज्ञानि
जनतिनैलाईअद्वैतसदानन्दमनिभन्दकरः तवतिनैलाईचित्प्रकाशईश्वरमनिवेदमा शास्त्रमासं
सारमापति आत्माव्यवहारजाग्याज्ञानिजोजतिहोसो सवैलेगरिगाउदकरः ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ त ॥

॥ १ ॥

मारुके ॥ पुन सोही वाक्य माथें हें मारु कता मा उपनिषत् ले गरि कहि न्क श्रुत ॥ क ॥ ति पर मा मा क सा क म
न्या शं कामा ॥ य सा क म न्या व्यवहार ॥ श्रुते अदृश्य कर ॥ समाति न श माति न्या ॥ अति चंचल हुता ले न
य क क्षे रा ॥ पति चिन्त ना गरि न श का कर ॥ पुन कै है पति ना श न हु न्या नित्य ॥ निश्चय स्व रूप य सा
हु म न्न श कि न्या ॥ केवल आत्मा हु म न्या जो प्रतीति ॥ सोही मात्र शार म या को अने क प्र पंच ज सा क दे देत गी

मारुके ॥ अदृश्य म व्यवहार्य म या स्य म नु क्ष रा म चित्यं प्र
त्य शारं प्र पंचो य सम म सि म ध्ये तु चतुर्थ म न्न ते स आत्म स
स्वी न य ॥ २९ ॥ केन के ॥ अ न्न दे व ता दि दि ता द धी ॥ ३० ॥ ॥

त केवल शिव स्व रूप हु म चातुर्थी श्व मी हु ले गा ई या का आत्मा ति नै हु अ के हो ई न ब ॥ २९ ॥ केन के ॥
पुन सोही वाक्य शं के त ला ई थों हें केन कता मा उपनिषत् ले सि धान्त ग र्क न ॥ श्रुत ॥ क ॥ जों हें स म्म ज श्ना ई
पर मात्मा ब्रह्म का प्रतीति ॥ अ न्न भव म या को हु देत ॥ तों हें स म्म यो ज्ञा नि हुं म न्या यो अ न्धे क हा उ क ॥ ज
व व ठिया वे द ना दि सा त्र कारि ता ले ॥ आत्मा ला ई ज्ञा न्द क ॥ त व ता ही आ का श ज सा व्या प क म या का
आ हु आत्मा स्व रूप ब्रह्म त ॥ म ही र त्मा हु ॥ भ नि आ कै मा ब्रह्म को सो रूप अ न्न भव हु न्क अ न्न ले नु प दे न ॥ ३० ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ८ ॥

यस्यमिति भतिब्रह्मज्ञान्याज्ञानिकसाहस्य भतिभनौलात भन अहप्राणिहेतुका जोअमतदुक्तं
हंतिब्रह्मज्ञान्याज्ञानिको मतद्राचोठहर्क तवयसैकारनले ज्ञानिजनरुहका अभिप्रायमत यक्षेहो
भतिकोहीजान्देनर ति कोमतकलोहस्य भतिभनौलात योसंस्कर्षवसैहो भन्या अभिप्रायकंदेजाति
न्याब्रह्मज्ञान्यादेहाभिमातिजिवभति तत्वज्ञान्याको अभिप्रायदुस्तुदोश्रोदुदेत ॥ ३१ ॥ वृहदारण्यके
यस्यमतंमत यद्रूपनवेदश ॥ तदृश्यब्रह्मतोह्यमितितत्वविज्ञात ॥ ३१ ॥ वृहद्
रण्यके ॥ सहेवाचतद्वैतदक्षरं ब्रह्मविद अभिवदत्यस्यूलं अस्तुममेवब्र
ह्मत्वमदीर्घं गहीतमसि ईच्छामयमरोगमयतेजमय ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
पुनकेरि सोहीवाक्यमावृहद्धारण्यनामा उपनिषत्ने गरिसिध्दान्तगर्दकर क ति अधिकहीयाका
अक्षररामजोहो ति अक्षरब्रह्मज्ञान्याजोहो सोहीब्रह्महो ति ब्रह्मज्ञान्याज्ञानित ति तैब्रह्मलाईमात्रम
भिवन्दतगर्दकर अहज्ञानिदेवैदेवैनर भतिगर्गचार्ययाज्ञवल्केनाईआज्ञागर्दकर ति ब्रह्मक
साह भतिभनौलात नहुजो नशानो नलगु नकोटो नरातो नकालो ध्यादिपांक्षरीव्यवहारादिले
पनियसाह भतिनशानु ईच्छामयमरोगमय ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

॥ त ॥
॥ ८ ॥

मा

प्राणादिव्यवहारलेपनि श्रुत्येभयाका। कीरणादिपनि नभयाका। हात पावपनि भयाका। मित्रवाहाराद्व
भन्या व्यवहारपतरस्याका। कोही वस्तु विशेष्येनियसाक भनि अनुमाननभयाका। अतिचंचल
हुना लेधारणाध्यानादिपनि गर्जनयाकीन्या। आदापनि नषायायसाक भन्या स्वरूपनि भयाका।

स्वं अप्राणमयमयुषमय मयारिपादमनतरमवाह्यनतदह्नन किं
चदश्राति एकथै नमनुदूष्ययतदप्रमेयध्वच। निरुजपरश्चाका
शदज आत्मा साहाध्वव। मनुष्येवानुईष्ट्यमम् ॥ ३२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

उत्सासत्प्रह्लादवाडा यत्नलेपनियकव्यदेष्टोतभन्या। तव वडो अज्ञानरूपी मलकनपनि
धोईक। उत्सापरम आकाशादेपिपनि नभया। आत्मा हर्षिणी ध्रुवकनकपागरिदेष्टिन्क भ
नि भनौलात। यो मने हर्षिणी आकासमा। मले मने लाई हेतु रमात्रदेष्टिन्क अहउपायेले देष्टिदेन ॥ ३२ ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ८ ॥

नेहनामिति ॥ तव योऽंसारमा ॥ जो देवि न्याश्रुतिन्याजो कसो ॥ यो हो ईत यो हो ईत मन्त्र २ मा वा किर ह्या
को जो हो ॥ सो ही व्रत हो ॥ ति व्रत न्या लाई ॥ फल क्यो छ ॥ भति मनो लात ॥ शानि जो कसो ॥ मूर्ख ज सो हु
न् ॥ मूर्ख जो कसो शानि ज सो शान वान ज सो हो ई जान् ॥ जान्या भन्या ॥ न जान्या ज सो हो ई जान् ॥ न जान्या ज
न भन्या ॥ व जो जान का ॥ ज सो हो ई जान् ॥ य सै निमिन्न जान्या जन जो कसो ॥ नेति २ भन्या श्रुति वाक्य

नेहनामिति किं च न अविज्ञातं विज्ञानता विज्ञातमविज्ञानता कटाति अ
था देवो नेति नेती मतो समतो मा प्रोति ॥ य ईहना नेव पश्यति ॥ ३३ ॥
नसिंतापनिय ॥ नैत्य सै द्वैत सिद्धिरासैव सिद्धेदिति यथा

ले ॥ यो हो ईत २ भन्या ॥ उप देवा ग र्द क्क न ॥ तव जो त योऽंसारमा ॥ काना ना वल्लु लाई ॥ सत्य तो व
धि गरि मा न्द क्क न्यो मनुष्य ॥ ये म राज देवि ॥ मर न पा उद क्क न ॥ ३३ ॥ नसिंतापनिय ॥ पुन सो
ही ता त य र्थे लाई ॥ नसिंतापनिय हरे गरि क ही न्द श्रुत क ॥ योऽंसारमा ॥ सत्य मनु वल्लु त के ही द्वैत ॥ अ
द्वैत सिद्धि मन्वा को त ॥ केवल ॥ आत्मा ज्ञानु मा व हो अर्को हो ईत ॥ तव ओं हां ना ॥ देव मनुष्या दि दे

॥ त ॥
॥ ८ ॥

विद्याकोतः। हेतुसिद्धिः अज्ञानमात्रहो। यो हेतुवस्तु जोकसे। (उतैव वस्तु कावन्ता मात्रहो। वस्तुनैव
वस्तुमातके ही वस्तुकोपति अनुभवहुदैतः। मति आत्मा अनुभव मया कावन्ता निरुहलेपति म
न्यकनः॥३४॥ नाविद्यति॥ पुन आत्मा वस्तुतः अनुभवः स्वल्पकदा। स्वप्रकाशमात्रकनः
उत्ता सोत सिद्ध आत्मा मा। इविद्यादिका अनुभवने गरि कसे गरि ज्ञानिन्सु ज्ञानिदैतः पुनति
यान्यद्विवः सत्तमात्रं हीदं शर्व सदेवा श्रमानुषे॥ नैहस्ता वस्तुनो किंचित् चनाम्
भूयते॥३५॥ नाविद्यानुभवात्मनी। स्वप्रकाशे सर्वसाक्षी रायवी क्रीय उद्वययत्यते
इहार्पिसमात्रमसदन्येत्॥ तहीदं शर्व कदाचिदात्मा स्वमहिम्नि स्थितो निरवर्धे कस्य॥३५॥
तः विकारादिपतिकेहीन मया काहुदा। शाक्षि स्वल्पकाकनः। उत्ता अद्वैत आत्मा लाई जो देव्यकन
सोतः यो संफूर्ति आत्मे मय मात्रा देव्यकन अहमूर्त्त जत हतः। यो नाता असतः वस्तु मासत्यै तो जन्
कं। पुन उत्तै यो संफूर्ति प्राणधारि हतका। आत्मातः यके कु अने ककेतः। मना ईर हीया काहुकनः कशो
गरि मतिमनोलातः। ति आत्मा जोकसेतः। आत्मे महीमा। मारह्या काहुदा शंफूर्ति शंसार देधिं निर्वे सेहो
इरह्या काहुकनः। पेशरह्या कोहुदैत हुदैत॥३५॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥ ॐ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ १० ॥

त्वपदमिति ॥ पुनर्यो दुःखपदको निवृत्तधरो इत्याको श्रुतिरुत्तमा ॥ यों हों कठवल्ली नामा उपनिष
ले गरिक हीन्दु अनः कः ॥ उत्साति अगुष्टमात्रप्रमानभयाका ॥ अन्त आत्मा पुहषजो कः सो ॥
सदा सर्वदा ईजन हह सवका हृदये मारही याका हुन्दर ॥ तपनि ॥ ईह उजन हह ॥ उत्साति आ
प्रेषारी मारहा का आत्मा पुहषला ईमुजावडा ये जे ले यो विषय भोग को उति पुहषला ईम
त्वपदार्थ नी वेध श्रुतय कठवल्ली ॥ अं गुष्टमात्रपुहषो त्ररासा सदा जनाना
हृदय सनी विष्टः ॥ त० स्वाच्छरीरात्प्रवहेन्मुजादिवैषिकान्धैर्यनः
तं विधातुं कसमत्तम अशरीरं शरीरेष्वनवस्थीतम् ॥ महान्त विभक्त्या मन
मर्त्या धीरो न शोचती ॥ ३६ ॥

जो मन्दै नर ॥ तर ॥ एसा शरीरादिमा सत्य भयाका वृत्त कन योग्य न भयाकाले ॥ उत्सापरमात्मा
व्यापक विभक्त भयाका अति शुद्ध अं मत ॥ तत्त्व स्वरूप भयाका कन कको गिरि ॥ जानु न ॥ जानु प
निकठिन क ॥ तसर्थ ॥ बुद्धिमात धीजन हह ॥ यसे शरीरादिमा उपरमात्मा पुहषला ईजानि ॥ यो
दुष्टे शरीरादिको शोक ॥ कती मन्दै नर ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ त ॥
॥ १० ॥

स्वप्नेति ॥ तव उस्ताधीजन ॥ पुरुष हत ॥ स्वप्ना अवस्थामापति ॥ जाग्रत अवस्थामापति ॥ उतैपरमात्मा
ईश्वरत्वा ईमत्रजानि ॥ यो संपूर्णानाशोक ॥ कनकोतिदिन्दु ॥ तव वग कला उक्त ॥ ३७ ॥ एह दूर राय
के ॥ पुन सोही वाक्य को सिद्धान्त निमित्त नार्थों हों ॥ एह दूर राय नाम उपनिषत्ते गरिक ही न्दु श्रुत
क ॥ ति आत्मा मन्या का कों हो भ नि भ नौ लात ॥ जौ ना पुरुष ला ई ज्ञान्या ज ह ह ले ॥ प्राण मय ॥ मनो म ये ॥

स्वप्ना तं जागरिता तौ चो मै ॥ यनाराह पश्यति सम हान्त म ॥ ३७ ॥ एह दूर
राय क ॥ कत म आत्मे ति ती ॥ यो यन्नि ज्ञात मय प्राणेषु हृद्यन्त्येति पुरुष
समान न्दु भ पक्ष का विवा न्दु शं च रं ति ध्यावती व द्दो ला इति वः ॥ ३८ ॥

विज्ञात मय ॥ यो हृद्य कल का वि च मा ज्योति स्वरूप ले र ह्या का ॥ पुरा शं पुरा प्राणि विषे आत्मा
स्वरूप ले व रो वर हो ई र ह्या का हुन्दु ॥ कले यी भ नौ लात दु ई पक्ष या का पं क्षि रु यी ॥ ध्या
उक्त च ल्कन चितौ भ न्या ज ता पुरुष जौ न हो सो ही आत्मा हो भ नि क ही न्दु बु रु ॥ ३८ ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ११ ॥

तद्यथासिद्धि ॥ पुनर्अर्कीदृष्टान्तालोकहीन्दुशून्यक ॥ तिआत्माकसाक ॥ मनिभनौलात ॥ वत्रेमाकेजोद
सोनदिकादुवेकिदामा ॥ जादो ॥ आउदो ॥ वारम्बारफिर्दो ॥ ददो ॥ तसैतिपरमात्मापुरुषपनि ॥ सोहीप्र
कार ॥ स्वप्ना अवस्थामापनि ॥ जाग्रत अवस्थामापनि ॥ वारम्बारफिर्दो ॥ ददो ॥ पनि आफैशानजसाहो
ईरत्ताकाहुन्द ॥ ३८ ॥ यथेति ॥ पुनर्अर्कीदृष्टान्तलेगरिकहीन्दुशून्यक ॥ जसैआकाप्रावि
यद्यथासाहानमस्यजिभेकुलेअनुशंचरति ॥ पुर्वपारचैवमेवायम्यरुष ॥ एतानुभा
वानावतत्राचरंति स्वप्नातचबुद्धान्तचरात् ॥ ३९ ॥ यथा ॥ सिन्नाकाशेलेनोवास्त्वप ॥
रोवाविपरीत्यश्रान्तस ॥ ह्यपक्षो ॥ क्षयएवधीषतयवमेवा ॥ सवायंपुरुषोअप्यायत
षेष्टेनकतामार ॥ शुपर्तातामापंधिहृजोदसो ॥ चारैतरफिर्दो ॥ ददो ॥ पनिथाक्याकाकदा ॥ ताशा
कानिमित्त ॥ आप्रपवेदाकनसमेटे ॥ योपध्वीविमास्वस्याकोदो ॥ पात्रामापदक ॥ तसैजानिजो
नपुरुष ॥ नेतिनेतिभनियाकाश्रुतिवाक्यलेगरिथाक्याकोदो ॥ जवतत्वशुतक ॥ तवकेहीका
मकोपनिकामना ॥ गदै ॥ स्वप्नादिपनित्योदेबेदेबेदे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥ त ॥
॥ ११ ॥

तवत्यो शुभं । तव केही काम को पति कामना गर्देन । स्वप्नादि पति तो देखेन । तव तो पुरुष का अज्ञा
नवछा उन्या । पापर पुराप दुवै न बहुरुक्त तव संकरी स्वर्गादि अनेक । लोकालोक पति न भया
रुयी । पुन तां हां का देवता हह मापति । देवता भया व्यवहारादिरुदेन । वेद भया व्यवहार पतिरु
देन । तव तो चोर छत पति । चोर रुदेन । भूरा हत्यादि पाप छत पति तो पापरुदेन चराडाल छत प
ति यत्र श्रुयो । न के कामः कामयते न के च न स्वप्न पति । अत्येतदति कुर्याप ह्या
यो भय ८० रूप अत्रापितति । लोकाय भलो कामवति देवा देवा भवति ते असे तो भ
वति । भूरा ह चराडालो चराडाल । यो स्वर्गो उ यो स्वर्ग आश्रमि तो नाश्रमि नभा
म शोड तापशा अन्वागतं पुराप । ॥ ॥

नि । तो चराडाल रुदेन । निच जाति छत पति तो निचो कहि देन । अश्रमि छत पति । तो आश्रमी क
ही देन । तपसी छत पति । तो तपसी कहि देन । जन्मोत पति पुराप पाप ते स्वाप फिरुदेन । पापर
पुराप को उनीती भया को कुरो शंफरी को कको दहन भया को रुक् । कस्का जोत । दैत ॥ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ १७ ॥

तदेवैनः। वेद्यापनिनाशुहन्तुः। रहदेनः। पुनः अविदेष्टियाका आत्मा विपरित भै ते स्कोनाशुहन्तुः। अ
विनासीहन्तालेतां हं। दोश्रो मन्त्रा व्यवहारतत्कारहदेनः। दोश्रो पतिहन्तः। तस्य सत्ये वस्तु व्यति रि
क्तः। अर्को देपुपदेन पदेनः ॥ ४॥ रहद्वाराय के ॥ पुनः त्यो साक्षिक सो गरिजानिन्दः। मन्त्रा प्राकात
रहद्वाराय नामा उपनिषत्ते गरिक हीन्दु श्रुतः। कः यो संपूर्ण को शाक्षिः। जोह सो जानु तनेति नेति
नान्वागतं वापेन तिर्गो हि सर्वा सोकां दुहति यद्देत न पश्यति पश्य चेन पश्यति न
हिदृष्टिदृष्टः। पिपरिलोको विद्यते विनाशी तन्न तु तद्दीति यमसि अनोन्यदिभक्तं ॥
पश्येत् ॥ ४० ॥ रहद्वाराय के ॥ एनेन्द ८० सविज्ञानातिनः केनो विज्ञानियात् स ए
षनेनेत्यात्मा ग्राह्यो न गृह्यते ॥ सिर्नेन शिष्यते सगेन श्रुते प्रितो न बंधते हृष्यति
होईन न मन्त्रा शतां हं वा किं शेष जो रहन्तु सोही साक्षि हो। तसै रिताले पक्रिया कोह दोपनि त्यो ८
ग्रह न गर्नु शकि देन त्यो जान्या पक्रित सृलाई कोडो मन्त्रा पनितो कुटतेनः। प्रांगम ह मन्त्रा पिनि
त्यो संगम हुदेनः। तश्चाईसीत ॥ अलेपनि वाधा गर्देनः। कश्चो ले प्रप्रा न्न गृह मन्त्रा त्यो प्रशन्न हुदेन ॥ ४० ॥

॥ त ॥

॥ १७ ॥

कन्दगे॥ पुनत्योपदकशो गरिजानिन्दमन्याशं कामाकन्देगेनामा ज्यनिषत्वे गरिकहीन्दुश्चनः कः
जस्कात॥ उपरुषथाक्याकोकदे॥ अत्रक॥ तवत्योमनुष्यनामापनि आहुः अद्यतापराक्रमः लीयरः काम्य
होईजान्दर॥ आपुपनिशुत्यैजसोहुन्द॥ तवत्योशंसारि॥ व्यवहारगन्याकोदेविन्दुतपनि॥ त्योव्यवहार
कन्दगे॥ जेवैतत्पुरुषं स्वपितीनामसनासोम्यतयासम्परागोभवतिस्वमपि
तोभवतितस्मान्देन९० स्वपितित्याचक्षत९०॥ स्वपितोभवतिअथयोवेदोद॥ ४२॥
जीवारातिमआत्मागथायद्युयोजईविव्यवहानितिसआत्मासर्वव्यवहारइति॥

गन्याकोहुदैत॥ तस्कात॥ अत्योमन्याजोहोसोहीअन्याहो॥ अथेतारं॥ कस्कोमन्याजश्रेतयोगं
धादिकोग्रहरागन्यापनिआत्मैहो॥ योशंसार॥ व्यवहारगन्यापनिआत्मैहोभनितिश्रय
गन्याकोकसोमनुष्यलेयोशंसारमाअनेकव्यवहारगरोसापनितेश्लाईत्योव्यवहा
रकोपापरपुरांको॥ लेपहुदैतहुदैत॥ ४३॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥ क॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ १३ ॥

अमृतविन्दो ॥ पुनर्योवाक्यमा ॥ अमृतविन्दो नामा उपनिषत्ते कहीन्दु श्रुतः कः तिय के आत्मा
जो कह सो जाग्र अवस्था मापनि ॥ स्वप्ना अवस्था मापनि ॥ शुषुप्ती अवस्था मापनि ॥ साक्षि स्वरूप
ले रह्य भनि ॥ निश्चय एकै रूप देख्यो जो कह सो ॥ तिला ईकेरीयो भव का गरमा जम हुनु पदे

अमृतविन्दो ॥ यक एवा मा मन्तत यो जाग्रत ॥ जाग्रत्स्वप्ना शुषुप्ति पु स्थान
त्रय व्यति तव स्प पुनर्ज मो न विदो ते ॥ ४३ ॥ कैवल्योत् ॥ त्रिषु धाम यद्भो ॥ ४४ ॥
यं भोगा भोगश्च यद्भवेत् ॥ तेभ्यो विलक्षणाः साक्षि चिन्मात्रे हंसदाशिवः ॥ ४५ ॥

न भनि जानु पद ॥ ४३ ॥ पुनर्योवाक्यमा ॥ कैवल्यो नामा उपनिषत्ते गरि सिद्धान्त गर्दक सु
न ॥ क ॥ स्वर्ग ॥ मर्त्य ॥ पाताल ॥ तिनै धाम मा ॥ और्तिनै अवस्था मा ॥ जो जो भोगी कह ॥ सो सो भोगादि संपूर्ण मा
साक्षि स्वरूप होई चित्प्रकाश स्वरूप मया काशदाशिव विलक्षणा कल्याण मूर्ति स्वरूप मया का महिम्न भनि
आकुलार् आकै ले जाद कर ॥ ४४ ॥

॥ त ॥
॥ १३ ॥

नपुन्येति ॥ पुनयाहविलक्षणात्तलेपनिहुन्वुश्चन ॥ शास्त्रिस्वरूपदुतापति ॥ नममापापादि
काकर्मकन ॥ नमेरेताशक ॥ नाशपनिमेरेकेहेकेन ॥ पुनबुद्धिआदिभयाका ॥ इन्द्रियरूप
नि ॥ मेरानहुनाले ॥ जन्ममृत्युभन्याकोपनिमेरेकेहेजादिन ॥ कदापनिधेन ॥ ४५ ॥ नभूमि

नपुरापपायेममनासिनाशोतजन्मदेहेद्रीय ॥ बुद्धिरसि ॥ यवंविदि
त्वापरमात्माहपगुहाशयनिष्कलमदितियं ॥ ४५ ॥ नाभूमिरापो
ममवहिरसिनचाह्वीलोमेसिनचावरंच ॥ ४६ ॥

योपथीआयतेज ॥ वायु ॥ आकाशादिभन्याका ॥ पंचमंहंभूतभन्याकोपनि ॥ ममासंवन्धेहेन
मकसोहभनिभनौलात ॥ केवलकल्पारास्वरूपविलक्षनभनियाकोशिवमहीहभनिआफु
लेआफेलाईजान्दुयसापरमात्माआफुस्वरूपलाईजानेर ॥ रक्षाकाशानिरुहजोहसे ॥ तिउनेशुध

परमात्माकास्वरुमापा

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ १४ ॥

प्रहस्कर तव जान्या जनले। यो देवि याका असकत कोडि। यो हृदय रूपी गुफा मासु त्याका कला
तित। संकुरा काशाक्षि अहेत स्वतपला ईजानु सत। अस मन्याका दुवै कोडि दिनु चाहिन्छ ॥ ४५ ॥
इति श्री वेदनात्मता संक्षेप टीका टिपण्णय प्रथम प्रकरणम् ॥ १ ॥ अं वं यां हां प्राण फेरि जीवरव

समस्त साक्षि सदृश ही हित प्रयाति शुब्द परमात्मा रूपं ॥ ४६ ॥ इति श्री वेद
नात्मत अमृत विंद वी पन्थ मो प्रकरणम् ॥ १ ॥ जीव ब्रह्मैकेश्वर तयः
तैत्तिरीयके। ॐ प्रज्ञान ब्रह्म ॥ १ ॥ ब्रह्म दूर राप के ॥ अहं ब्रह्मास्मि ॥ २ ॥

हमि न होईन। यकै हो मन्या श्रुति हसमा प्रथम तैत्तिरीय के नामा वेदशाखाले कहिन्छु श्रुत।
क प्रज्ञान जीवा मा शुब्द ब्रह्म मन्याको। उनै ॐ कार हो। अर्को होईन ॥ १ ॥ ब्रह्म दूर राप के पुन
यां हां ब्रह्म दूर राप नामा उपनिषद् ले पनि सो ही सिद्धान्त कहिन्छु श्रुत क। अहं ब्रह्मास्मि मनि म
जो छु सो केवल ब्रह्मै हु यो नाना जीव होईन होईन ॥ २ ॥ ॥ १४ ॥

॥ त ॥
॥ १४ ॥

कहेगे॥ पुन सोही वाक्य को त सिध्यत गरि कहेगे नामा उपनिषत्ते कहि न्दः श्रुतः कः ति व
स्मयद जो हो सो तो आपे हो अर्को हो इत हो इत ॥ ३ ॥ मारा के ॥ पुन यां हां मारा के नामा उ
पनिषत्ते पति सोही वाक्य को त ग र्द क सुन तो आहु आमा जो हो सोही के बल ब्रह्म हो
कहेगे ॥ तत्त्वमसि ॥ ३ ॥ मारा के ॥ अथ आमा ब्रह्म ॥ ४ ॥ केव
ल्यः यत्परं ब्रह्म सर्वा मा विश्वस्यत न महत ॥ ५ ॥ ब्रह्म विद्या वा हा
र श्रुतयः केवल्ये ॥ मय व स कलं जात म ई सर्व प्रतिष्ठ म ॥ ॥
जीव हो इत मति जानु प र्द क ॥ ६ ॥ केवल्ये ॥ पुन सोही वाक्य सिध्यत केवल्ये उपनिषत्ते प
ति कहि न्दः श्रुतः कः जो ब्रह्म मन्या ब्रह्म जो हो सोही संस्कार जन का आमा हो ई कत यो ज ग मा
का स्थान वति रत्वा क हु न्द र दो श्रो के त ॥ ५ ॥ ब्रह्म विद्यति ॥ पुन यां हां उ प्राज ब्रह्म जा न्या ना
नि ह ह का व्य व हा र य हो हु न्द म न्या श्रुति ह ह मा केवल्ये नामा उपनिषत्ते कहि न्दः श्रुतः कः

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ १५ ॥

महीदेवीयोजगत्संपूर्णचराचर. उत्पन्नपनिहन्तुमहीमारह्याकोटः पुनर्महीमालयप
निहन्त्याह. तदर्थ. उत्सा अद्देतवत्तमहु अर्के होइत. ॥ ८ ॥ अतोयेति. पुन उल्लेखानामा अ
तिमानु अनुमात्रपनिनभया कोमहीहु. हुलाभन्दापनि अति हुलो विश्वमा व्यापक. महीहु
योविचित्रस्वरूप होइरह्या कोविस्वपनिमहीहु. सबभन्दा अति पुरातन पुरुषपनिमहीहु. स.
मईसर्वलयेयानीत दुस्सा द्यमस्यहम्. ॥ ९ ॥ अतो रनित्यात हमेवत दुस्सा
हानहं विश्वमिदं विचित्रं. ॥ पुरातनोहं पुरुषोहमस्मीहिरामयोहं सदशधिरि
तम्. ॥ १० ॥ अवाशिषादोहमचिन्तशक्तिपद्माम्ये चक्षुःश्रोत्रो म्पकर्ण. ॥ अहं विजा
नामिविविक्तरूपो न चास्तिवेनाममचि सदाहं स. ॥ देवैरतो कैरहमेववेद्योवेदान्तस्त
असह्येहीनभयाकोहीरामयस्वरूपपनिमहीहु. दोश्रोद्धेत. ॥ ११ ॥ अयशिति. ॥ पुनहानभ
याकोपनिमहीवडोपराक्रमीसमा उन्याहानमहीहु. विनाआखाकोपनियोविश्वदेव्या आखा
महीहु. कान्तनभयाकोपनि संपूर्णविचित्रशून्याकोनमहीहु. यकान्तमारह्याकोपनि संपूर्णजा
न्यामहीहु. मरुपीचिस्वरूपीआमा लाइजान्याकोही हैतन. ॥ ८ ॥

॥ ८ ॥
विदेवयो

॥ त ॥
॥ १५ ॥

ॐ वेदे ॥ पुनर्उत्से मनेकवेदादि हस्तलेखना इत्यापनि महीहं पुनवेदादि जान्यापनि महीहं भनि ॐ
वेदमापनि सोही वाक्य सिध्दान्त कृत क. सूर्य होरपनि अनुभव गचा को कु. चन्द्रमादि ग्रह गणा
वतिपनि अनुभव गचा को कु. यके कदे श्रो कैत ॥ ८ ॥ तैत्तरीयके ॥ पुनर्तैत्तरीयवेद कार्यालेपनि सो
ही वाक्य को शंकेत ग. क. अन्नपनि महीहं अन्नखान्यापनि महीहं अन्न भनि खुवा उत्यापनि स
ॐ वेदे; अहमनुभव सूर्य श्रद्धा मा; द्या ग्रह गणा ॥ ८ ॥ तैत्तरीयके ॥ अहमन्यम
हमन्नाहमन्नाहो ॥ १० ॥ कृत्ये ॥ अहमेवाग्र्यमहमेवापरि विद्याहं पश्चादहं
दक्षिणातो ह मुत्तराहमेवेद ८० सर्वके वला ब्रह्मविशानामो ह्यो जानेत हेतुता ॥ ११ ॥

हीहं अर्को को हीहं ॥ १० ॥ कृत्ये ॥ पुनर्लोही वाक्य माहुरे गेता मा उपनिषत्ते सिध्दान्त गद कृत्युनः
क. उद्यो रहत्यापनि महीहं कर्वपश्चिम उत्तर दक्षिणा सिफर्या मा महीहत्या को कु. तव आफैले आफु वृषा
जानाले मात्र यो संकार देखि मोक्ष हुन्छ दोश्रो उपाय कैत कैत ॥ ११ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ १६ ॥

एवमिति ॥ पुनस्तोही अर्थला ईति वा सोरले गरि यां हां श्रुति ह हले सि ध्याता ग र्द ह मुन क ज
सै यो गरी र मा या व दे विं की र स म मा कालाले वे ही र ह्या को हु न्द त सै र ता ले आ का शा दि प च ह त मं
कृती मा ज्ञा तै ले गरि वा प्र हो ई या को र ह्य क म नि ज श्वा ई जै हे अनु भव हु न्द त सै स म ह मा पो मु नु व्य जो
क सो आ फु आ मा दे व ला ई ज्ञा ने र सं क र्ण दु र व को ना स हो ई ज्ञा न्द रह दे न ॥ १२ ॥ श्वेता श्वे त री य के
य व म र्थ द श यं ति सा ले पं श्रु त य स्वं य द्वा व म्पा व द्वा का पु प वा य इ प्य ति मा न वा ॥ त दा दे
व म वि ज्ञा यः दुः स्या न्तं भ व ति प्य ति ॥ १२ ॥ श्वेता श्वे त री य के ॥ य दा त्मा त त्वे न तु व लु
त त्व दी पो य मे हो ह यु क्तं प्र स्र य ते अ ज ध्रु व सर्व त त्वे वि श्र द्धं ज्ञा त्वा दे व मु च्य ते सर्व पा शी ॥ १३ ॥
पु न बां हां सो ही वा क्य को शं क त गरि श्वेता श्वे त री य ना मा उ प नि ष ल्हे गरि क ही न्द अ न क जो ना श
म ह मा दी प क का ज सो उ प मा भ या का व र्ण त त्व मा आ मा त त्व ला ई ते ल ज सो ज व दे व्द क्त व
अ प्पा आ फः सं क र्ण त त्व ले श्र द्ध म या का ना श हुं न्या व र्ण त्व ह्म पी दे व ला ई ज्ञा नि यो ज्ञा नि जो क सो
सं क र्ण पा श दे विं मु क्त हु न्द रह दे न रह दे न ॥ १३ ॥

॥ त ॥

॥ १६ ॥

ज्ञातेति ॥ पुन उक्ता आत्मा रूपी देव लाई ज्ञान मात्र. अज्ञान ले युक्त भयाका. संकृती पाश को नाश हुन्छ
 रह देन. जब त्यो पाश रूपी लैशा दि को नाश हुन्छ तब तस्का जन्म मृत्यु. रूपी अनेक दुःख छुट्छ
 छर. तेसा भजन गर्ना ले ते स्को देहादिका भेद पनि नाश हुन्छ. यो संकृती शंसा को ऐहिक
 पाये रुजीतु र सास्त्र लेह मा देन ॥ १४ ॥ यद्युर्वेदमिति ॥ पुन यो वाक्य मा. यद्युर्वेद का मध्य

शब्दा देव सर्व पाशा पनाही छिरो के लैशै जन्म मृत्यु प्रहारा ॥ तस्या भेदनात्
 तयं देह भेदे विश्वेश्वर्य केवल भाषकामा ॥ १४ ॥ यद्युर्वेद मध्य अति ॥
 देवाहमेतं पुरुषं सांख्येनासादित्यवर्त्तितमसपरस्तात् ॥ तमेव विदित्वा नात्य
 न्धा विद्याते अनाय ॥ १५ ॥

नूनियशाखाले पनि सिध्यत गर्छ सुत. क. वा. रू. रू.
 र्य का जसो तेज. भयाका अन्धकार देखि पर रक्षा का. उक्ता वडा संज्ञा पुरुष कन मजान्द कु. उ.
 सा ब्रह्म लाई ज्ञाना निहृत. जन्म मृत्यु लाई जित्छन् तब यो ज्ञाना मा बागे अर्को छैन. केवल अ

स्व
 धिक्करी भाषा का वाक्य मात्र म
 यच्छ ॥ १५ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ १७ ॥

तैत्तिरीयके ॥ पुन सोही वाक्य सा तैत्तिरीय वेद का खाले सिद्ध न गर्ह न क उता सत्य ज्ञान स्वरूप ज
का ज्ञात भूत पति है न यज्ञा हृदय रूपी गुफा सा रक्षा का श्रेष्ठ अकारा ज्ञाता ब्रह्म कृत ज्ञाना
ज्ञात संकरा का मना ले संग भवा का पति ब्रह्म मय हो ईश्वर रह दे न ॥ १६ ॥ रह दूर राप के मु

तैत्तिरीयके ॥ सत्य ज्ञान मन त ब्रह्म तो वेद हितं गुहा या पर मे यो म सो सो

कृत सर्वा कामा सह ॥ १६ ॥ रह दूर राप के ॥ य वेत मनु पश्य त्यामा

न वेद म अत्रा ईश्वर न भूत भव्य स्य न त तो विजु क्य ते ॥ १७ ॥ ॥ ॥ ॥

न सोही वाक्य सिद्ध न था हा रह दूर राप ना सा उपनिषत् ले कही न सु न क जौ न आत्मा स्वरूप
मय र भूत भविष्य वर्तमान ति नै काल का माली क ईश्वर ला ई अत्रा आत्मा तत्व भाव ले जो सं
कर्मा मा देव्यु तौ जो ह सो यो वा वह रा दिकर्म गर्दो पति यो निद्रित हु दे न भनि सव वेद वे
दना दि सा पति कही या को क अन्य था है न है न ॥ १७ ॥

॥ त ॥
॥ १७ ॥

समायति ॥ पुनर्निर्वाणं ब्रह्म भगिर्भनौलात कश्चिदेषि न भयाका अज अतिवादा हुनाले अस्मत्सु
पहो ई संस्कारिका आत्मा हो ई याका पुनः सर्वमन्त्रे अतिवीथारो हो ई अमया स्वरूप हो ई याका
यत्ता ब्रह्म ज्ञाना जो छ सो ब्रह्मे हो भगिपति वेदैसा कहि याको छ अतस्तेन ॥ १८ ॥ कन्दो गे ॥ पुनः सो ही

समाय संमहा नृज आत्मा सरो मते उभयो ब्रह्मा उभय ८० हिनेव
ब्रह्म भवति य एवं वेद ॥ १८ ॥ कन्दो गे ॥ तरति शोकमात्मवित्तप
प्रपति मत्तं न पश्यति रोगो दुःखं ता सर्वमहं पश्यति सर्वमाप्नोति
सर्वं ॥ १९ ॥ केन के ॥ रहस्यं दम्बे दितः ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥

वाक्य कन्दो गेनामा वेदशाखा लोक हीन्दु मुन क उस्ता आत्मा ज्ञाना ज्ञानित लोक देषि पतित ई
कन मत्तु देषि पतित ई कन रोगादी पति देष्टे नर दुःखादि पति देष्टे नर संस्कार अनिष्ट प
ति निति ज्ञाने नर ईष्ट मात्र देष्ट कन भगिपति वेदै लै गरि कहिन्दु ॥ १९ ॥ केन के ॥ पुनः यां हां के
न के नामा उपनिषद् पति सो ही वाक्य कहिन्दु मुन क ये कान्त स्थल माग ई वरेश्वर का आ

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ १८ ॥

सनवना इवसी उग्रहमखारविन्देषिमिल्याकोवसुला इविचार गरि सत्यहो भनिनिश्चयले
आकुपनिब्रह्महो इजानु यस्मा मनुष्यशरीरपायी कन उस्ता भापै मारत्याका ब्रह्मला इजा
नेन मन्या वडो नाश भयाको तत्को सोही हो अर्को हो इन यसै कारण बुद्धिमान जन हरु जो कन
सो भूतेषु न संस्पर्श प्राप्ति हरुमा विवेक गरि बोली निश्चय गरि यही देहमा अमृत तत्व
व्यं सत्यमसि न चेदिह ॥ वेदितं महति विनष्टी भूतेषु विचिन्त्यधीत
प्रेत्यस्मान् लोका मता भवन्ति ॥ २० ॥ मृगशुके ॥ यथाननुग्रहमाणाशु
देतं गच्छन्ति नामरूपविहायः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

हो इजान्द मन्या तितो तव तितो शरीर कुट्यापछि ब्रह्मे मालय हुन्छ भन्दा माक्या आश्चर्य क
हेन ॥ २० ॥ मृगशुके ॥ पुन सोही वाक्यमा यथार्थ गरि मृगशुके नामा उपनिषत्ले गरि कहिन्छ
मृगशुके जसो संस्पर्श नदी हरु जो कन सो वशिष्ठ मुन्दूमा मिल्या प्रात आहुतामरुपादि त्रावै छु
टि तिसा मुन्दू समय हो इजान्द न सो रिता ले जानि छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥

॥ त ॥
॥ १८ ॥

नतपुरुषपतिः आहुतामरूपादिसंस्कृताभिमात्रकृतिः परमन्दापतिः अतिपरमयाकाः आत्मा
पुरुषदेवमाप्राप्तहोइजात्यरः तवब्रह्मजान्माब्रह्महोइजात्यरः तितत्रोक्तदेविंपतिः तर्दकुरुदय
माकावासनारूपीग्रन्थीकोपतिः भेदरुदेनः तित्कासर्वशंसयकोतात्राहुत्यरः कर्मादिपतिश्चि-
तथाविद्यानामरूपादिमुक्तयत्यरं पुरुषमुपैतिदिवंसयोहवैतत्वरं ब्रह्मवि-
द्वैमेभवतिः तरतिशोकंतरतिपाप्मानंमिद्यतेहृदयं ग्रंथिद्विद्यतेसर्वशंस
याद्विद्यतेचस्यकर्मानितस्मिंदयपरवरे ॥ २१ ॥ ब्रह्मविज्ञातात्मा यहुदेवै
ष्वसर्वेप्राणाभूताभूतासप्रतिष्ठनियत्र यदक्षरवेद्यतेयत्तुसैम्यासर्वज्ञत्वं
सर्वमेवाविवेश ॥ २२ ॥

राहुत्यरुदेनः कल्काभनिभनौलातजज्ञेत् परमन्दापतिपरमयाकाः आत्मारूपीश्वरलाईदे
व्याकाहुत्यर उलैकोहोआर्काकाहोइत ॥ २१ ॥ ब्रह्मेति ॥ पुनसोहीवाक्यसिध्यतवेदप्रज्ञलेपनिगर्द
कसूनः कः उस्ताविज्ञातातत्परमात्माब्रह्मत संस्कृताइन्द्रियकाअधिष्ठाहोइकतयोवारीतादिमाप्राणात्पर
यहोइकप्रप्यातक सोहीश्वरसर्वज्ञभनिकहीक उतैलाईअक्षरब्रह्मपतिमन्दरः पुनतिनैब्रह्मदेव
तामापतिइप्राणिजीवहहमापतिचित्रस्वरूपलेसंस्कृताप्रवेकाहोइरह्याकाहृत् ॥ २२ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ ९८ ॥

केवल्ये ॥ पुन सोही वाक्य को शंकेत केवल्योपनिषत्के पुन क. यो संकरी भूत प्राणि सार स्या का आ-
त्मा जे छ सो समापति उनै र स्या का छन. संकरी भूत प्राणि हू समापति उनै र स्या का छन. या ह को र. वा ह
को भेद रहेन छ भ निज श्रेति श्रय ज्ञान्या को छ सो ही य क त्व ज्ञान रूपी पर ब्रह्म मा प्राप्नु क. उपाय ये ही
छ अ को छे न छे न ॥ २३ ॥ अहमिति ॥ पुन अ को हेतु ले कहि छ पुन. उ सा पर ब्रह्म म ही हू भ न्या जन का अ
केवल्य ॥ सर्व भूत स्य आत्मा रां सर्व भूतानि चात्म शिः ॥ सम स्य ब्रह्म पर मं
याति नान्य न हेतु ना ॥ २३ ॥ अहं ब्रह्मेति विज्ञान केवल मे वा म त फल ॥ न तु स्व
रू दिग्भेद भा वि वेदि नै व प्र द श्य ते ॥ २४ ॥ तै त री य के ॥ य तो वा चो नि व र्त्त ते
अ प्रा प्य म न श स हः ॥ आ त न्दे ब्र ह्म रो वि द्या त वि भे ति कु त श्र व न ॥ २५ ॥

अस्य तत्त्व कलत. काल तुल्ये कहि छ. परन्तु स्वर्ग दिफल का ज सो तु च्छ फल भ न्या हो त भ ति य नि वे द
मा कहि या को छ. पुन तां हं आत्मा विचार य नि चा ही न्द ॥ २४ ॥ तै त री य के ॥ पुन सो ही वाक्य मा तै त री य
वेद शा खाले कहि छ. अत. क. उ सा म न ले य नि त्रां ग न भ या काः व च न य नि ज्ञां हं त यु गे र फि र्द छ भ न्या. य
सा पर मा न न्द ब्र ह्म का स ह्म क न ज्ञा न्या शानि जो छ सो त. का ही य नि त भ य सं का मा दे न आ त न्द नि र्भ य हो

॥ अहं ब्रह्मेति विज्ञान केवलमेवामृतफल ॥ २५ ॥

॥ त ॥
॥ ९८ ॥

ईशावाक्य ॥ पुनलोहीवाक्य ईशावाक्य उपनिषत्मायनिकहीन्दुसुन. क. जौन ईश्वर. संकृतीभूतप्राणि
हृत्मा. आत्मास्वरूपले. रक्षाकाहुन्द. भतिजान्याशानिजत हृत्कनत. लोककांहां. मोहादिपतिव्यासा. लो
कमोहादिद्वैतत. द्वैतै देष्ट्याला ईमात्र रहन्द. अद्वैतमारहदैन. ॥ २६ ॥ तैत्ररीयके. ॥ पुन ६ लोकाक्यतैत्ररीय
केनामावेदशाखा लोपनिकहीन्दुसुन. क. उसायकत्वज्ञानमानिष्यमयाकाशानिजत हृत्तकेवलव
ईशावाक्य ॥ अस्मात्सर्वीशी भूतान्यामैवाभूद्विशानतः तत्रकोमोहः कः शोक एक
त्वमनुपश्यति ॥ २६ ॥ तैत्ररीयके. ॥ तमेवविदुः अमृतमभवति ॥ २७ ॥ बृहदारण्यके. ॥
अभयं वै कदाप्येति यदा सर्वेषु मुच्यते ॥ कामयस्य हृदि श्रुत अथामर्त्यो मृतो भवः ॥ २८ ॥
हमयहो ईयाकाकंदं अमृततत्वहो ईजाकृतरहदैनर ॥ २९ ॥ बृहदारण्यके. ॥ पुनलोहीवाक्यमा. बृहद
रण्यतामा उपनिषत्ते गरिकहीन्दुसुन. क. एता अकोत्वज्ञानमयाकाहुदयनि. कशौकाहृदयमाकाम
नारक्षाकोहुन्द. योकारी कुद्रापकिमुक्तहुन्द रहदैन. नारक्षाकाजत हृत्तजोहृत्त. सदाशर्वदमु
नैस्वरूपहुन्द रवन्द कैहेहैहैतदैन ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ २० ॥

कदेगे ॥ पुन सोही वाक्यमा सिध्यन्नगरियां हं कदेगेतामा उपतिष्ठते गरिकही न्दुःखः कः ॥ उक्ता ब्रह्म
जान्यानाति हस्तः तिनैव ह्नामः रतिराष्ट्रकन आत्मा लो आत्मे मा किडा गर्दकनः पुन तित आत्मे मा मि
धुनादि भावराधिकः आत्मा आनन्दे मा रहस्यकः सोही स्वराष्ट्रकन उक्ताः सोही भावे ईच्छाले गरि

तत्र ब्रह्म श्रुतय कदेगे ॥ यवन्वि जानंतात्मा रतिराष्ट्रकन मा मि धुन
मात्मानन्दः स्वराष्ट्रभवति ॥ तस्य सर्वे लोकेषु कामचारे भवति ॥ अहं ब्र
ह्मेति यवी दुःखफलेषु विभृतिर्नो वाक्यति ॥ २८ ॥ दोहा ॥ प्रसप्त प्रकारः माया
कही उत्तरमाया किधारः ॥ मायाको अवलम्बितकैः वशिष्टकप्रकटप्र
चारः ॥ १ ॥ इति श्री आत्मा विज्ञान नाम वेदान्तात्म्यतादितियो ॥ प्रकराणाम् ॥ २ ॥

संपूर्ण लोकाः लोकमा आनन्दमिदं कनः को भति भनौ लातः जोतः मजो कु ॥ १ ॥ निश्चयवन्नेह भति
जान्याकाहस्यकः सोतयेताना फलादिपेक्ष्यकोपति ईच्छारथेन न ॥ २८ ॥ इति श्री आत्मा विज्ञा
न नाम वेदान्तात्म्यताष्टीपनदितियो प्रकराणाम् ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॥

॥ त ॥

॥ २० ॥

पि

अनयां प्राप्तिरिति कोही हेतु ले कह न्यामया का श्रुति ह र मा प्रथम ऋग्वेद का कोपीत की यता
सा वेद वावा ले कहि न्दु श्रुत क जे न मनुष्ये ले मरुपी आत्मा ला ई ज्ञा न्दु क तस्का के ही कर्म ले प नि
जीति आ को क स्वर्ग न की दि लोक को भोगा दि संकरी लो ते श्वा ई के ही प नि भोग्य प दे न पुन ते श्वा
के ना वि हेतु ते पेत मर्थ क थ इति श्रुत ऋग्वेद को पीत किये ॥ यो भावि
शानिय न्न त्रय च के न रा च कर्म री लो को सि स ते ॥ म मा वि व न्धे न पी वि
व न्धे न न ले य न ह्नु रा ह त्या या ना त्रय पापं च कु षो मु र्वा न ल चेति ॥ १ ॥
द ह द्द र राय के ॥ य व नि त्यो म ही मा वा

इ पुन मा वि पी वि व धा दि भ यो और चौरा दि कर्म भ यो और बाल ह त्या दि पाप प न्या को भ या प
नि मरुपी आत्मा ला ई ज्ञा नि मा त्र त श्वा ई त्यो पाप ले व ध्य ग र्त रा कै न क ह्य पी भ न्या ज सै भ श्रि का मु
ख मा ज्ञा ज्ञा हो मी न्दु र लो सं करी भ स हो ई ज्ञा न्दु त सै त्यो शानि का प नि त स म हे मा त्यो पा पा दि स
करी भ स हो ई ज्ञा न्दु र र ह दे न र ॥ १ ॥ द ह द्द र राय के ॥ पुन सो ही वा क्य मा था हा द ह द्द र राय

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ २९ ॥

नामा उपनिषद् एक ही कृष्णः कः उक्तातिवृत्तजातुमहीमातवाप्तगहृकोहोतरत्यो जातुमतक
 मादिलेव दूदेतः कर्मादिलेः स्वर्गादिमात्रगता उक्तः कः सैले जानिन शक्तः उक्तावृत्तयदजात्मापदिः
 येनाना कर्मादिकायापत्योके ही लेपनिलेप दूदेत दूदेत ॥ २ ॥ कर्मैति ॥ कः साः कः साला इयापलेप दू
 देतमनिमनौलातः जौनपुरुषमवृत्तिरुभन्यातिश्च यमयाकाहुत्वरः तसैला इयोनानाकहीआया
 स्यरावपनकर्माव चनेनौ कषियानसैवस्यदन्विदन्तं विदित्वानलीप्यते ॥ २ ॥
 कर्माणापायकेतयेऽववेदाहं वृत्तास्मीतिसर्व ८० सर्वव्यथ्यति ॥ ३ ॥ तस्य
 ह देवा अनाभूत्वा इतर आत्मा ह्येषा ८० संभवः ॥ अतयवनशोतिपुरायपाप
 जं सताप ॥ ४ ॥

का कर्मादिसंस्कृती सिद्धि दायक फल हो इजा न्दुत पुनति कहीयाका संकुरापायादिलेपनित्योले
 पदूदेनमनी संकृती श्रुतिहृमा कहीयाको दूदे शो देत ॥ ३ ॥ तस्य ह मिति ॥ पुनकेरि कही न्दु शूनः
 कः जश्वेतस्व आत्मा ला इति श्रुयजान्याको दूतिकामहीमातः देवता हृयनितजा देत नृत सैका
 रतातिन्ला इयापपु रापति दुर्वै देवि मयाकाः कीनापलेः लेप दूदेत दूदेत ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ त ॥
॥ २९ ॥

तैत्तरीयके॥ पुनस्तोहीवाक्यमा॥ यांस्तैत्तरीयकेनामा उपनिषत्ले गरी कोही वन अपनिनामा शिष्य जो धिया
सोही वात॥ आक्रा गुरु संग सुध्या उक्तर॥ क॥ हे गुरो मैले आत्मा जाना निमित्त यो यत्र चाको वठिया हवैन कया
वठिये होला॥ किया पा गरी यो भनि वडा अधिन होई शुध्यत॥ ५॥ वृहद्दरशपके॥ पुनस्तोहीवाका शिष्ये

तैत्तरीयके॥ यव ८० हवान अपती किम हं सा धृता कर वं किम हं पापम कर व
मिति॥ ५॥ वृहद्दरशपके॥ उभे उह भैषा एते तत्तरिते नैतं कुरुता ते तपत
अहं ब्रह्मे ते भवार॥ ६॥ तत्त्वमश्रपादि वाक्य ज्ञातो जगतो भवार॥ १॥

को उत्तर॥ गुरुने फरसे॥ वृहद्दरशपके नामा वेदशाखाले गरिकही उत्तर गद्द फर॥ क॥ हे वावु हो॥
प्रथम बाल बहल्ले दुई काम को यत्न गर्नु पर्दछ॥ कोत श्वात भनौलात॥ पठनाले गरि अज्ञान देखि तद्
फर॥ ब्रह्म जानाले गरि होई रस्या को कर्म र॥ पदि आ उत्था कर्म को ताप हुदै न॥ कशोरि भनि भनौला
त॥ मजो छु ब्रह्मे रस्या छु भन्या अनुभवले गरि॥ योता पर हुदै न॥ ६॥ तत्त्वमिति॥ हे वावु होति मितत्त्वम
श्रपादि वाक्य का अर्थ कत कोडि अज्ञानले युक्त भया काति मिहृजो कै सो यो जगत्का मुल भया का श्रुति

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ २२ ॥

हृत्लोक्याका सतमा सत्यकिनमादको योगा स्वर्गे भवति यत्तले गरित्वगमा बहुम्भनिकह
न्याभयाका श्रुतिहृत्मा किनम्भुन्दको भुल्लु कैत ॥ १ ॥ कोपितकिट ॥ पुनलोहीवातमायां हंकोपि
तकियतामा उपनिषत्प्रोपनिकहीन्दु श्रुत क जोताशमहेसा योशोरि रको उत्रारीरिपुरुषसुत
श्रुतिचंवहुमन्मश्रु ॥ १ ॥ कोपितकिय ॥ यत्रैतत्पुरुषसुप्रस्वप्नने किंच
नपशति अस्मीप्राण एवधावतितदेन स्वा अस्य सर्वेतामपिसह इति च
धुरुपेसहायति श्रोत्रं सर्वे सद्देसहायति मनसर्वे धनैश्चाहाय्यातिकाले
नशायदाप्रति कुप्यते यथानैज्वलना ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
क तवयां हा त्योस्वप्रादि पनिकेहीदेव्येन प्राणादिहृत्पनि आक्रान्तामहपले गरित्वोहीपुरुष
मालमहृत्तर नेत्रपनिरुपादिले संगभयाका तसेमालयहृत् नकानपनिसंपूर्णशब्ददिले सं
गभयाका कदा ताहीमालयहृत्तर मनपनिशंफरीध्यानादिले संग होइताहीलयहृत्तर नजवत्यो
कोहीकालवसलेविउरुत्तर तवजसैवन्द अग्निदेविं ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ त ॥
॥ २२ ॥

त्रिलोका (उत्तर) तस्यैति पुरुषदेवि पहीले मनहुन्क. मनका शं गमा. संकृष्टा प्राणादि हुन्कृत्यो
प्राणादेवि देवता हुन्कृत. तिनै देवतादि हुन्कृत्यो देवि स्वर्गलोकादि लोक हुन्कृत. ॥८॥ ब्रह्म
रूपके. ॥ पुनर्योवाक्य यां हं ब्रह्मरूपके नामा (उपनिषत्मापनि कहीन्कृत्यो सुत. क. न सैव ब्रह्म अग्निदेवि
द्विस्फुली गावी प्रतिष्ठेत् एवमेवैतस्मात् मनप्राणायथा त्ववी विज्ञानि प्र
तिष्ठन्त्ये प्राणोभ्यो देवा वेदेभ्यो लोका. ॥८॥ ब्रह्मरूपके. ॥ अथाग्ने शु
द्रविस्फुली गां च चरन्ते एवमेवात्मा आत्मानं शर्वे प्राणा शर्वे लोका श
र्वे देवा सर्वं शि भूवरा नि शर्वी पीता आत्म सेव्यं चरन्तीति ॥९॥ ॥

साक्षात् अनेक त्रिलोका (उत्तर) तस्यैति ताले गरि. आत्मा पुरुषदेवि पति. मन आदि भ
याका अनेक प्रकारका: देवता. अनेका दिव्य लोका लोक संपूर्ण केवल आत्मै देवि (उत्तर)
नहुन्कृत्यो आर्का देवि हुदैत. ॥९॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ २३ ॥

एद्वेति ॥ पुनरसौ ज्ञां हं हेतदेवेन ताहा दो श्रोयति अर्को दैनः एसे कारराः हेतवादिजो कः सोः
त्यो अंध कुप माय या का कृदः तस्को मनवारम्बारः यो भववाटवी मान के हे विद्या मन पाई कि
दृष्टनः विश्राम पाउदेन ॥ १० ॥ इति श्रिष्टि श्रुतये ॥ यत्ता प्रकार श्रिष्टि की क्रम मया का श्रु
यद्देत न पश्यतिः तनुत द्वितीय मसि अतो विभक्तं मत्पश्यतः सोऽधेति ॥ १० ॥
इति श्री श्रुतये ॥ वेदान्तोभ्यो एव ब्रह्म प्रत्यक्ष भवत्यत्र श्रुतयते तैत्तरी
यके ॥ वेदान्त विज्ञान शुनि श्रीतार्था ना वेद विरम नु तेतं माह नमः ॥ ११ ॥ श्वे
ता श्वेतरीयः ॥ ब्रह्मोपनिषत्परं ॥ १२ ॥

तिरुहमाः यां हं केवल ब्रह्म प्रत्यक्ष हुता वा उन्याते तैत्तरीय के नामा वेद शाखा लोक हीन्दु श्रुतः कः
जो वेदान्त का मत ले आत्मा मानि श्रय मया का हुन्दः तिनानि जन हस्तः यां हं वेद ज्ञान्या वैदिक
हस्त ज्ञान्या भनि माने माने नर ॥ ११ ॥ श्वेता श्वेतरीयः ॥ पुनश्चेता श्वेतरीय नामा उपनिषत्पति सोही वा
क्यमिच्छन्त गदृष्ट श्रुतः तव तलेति मित्र ब्रह्म का विवेक मया का ब्रह्म उपनिषत् श्वेत् कहीन्दु श्रिष्टि
कारण होई या का वैदिक हस्त ही श्वेत् क हा उदेनर ॥ १२ ॥

॥ त ॥
॥ २३ ॥

वह धर राप के ॥ पुन उल्लेख का क्य मां हं वह धर राप के नामा उपनिषत्मा पनिक ही स्मृत के ये
लोयोतत्व उपनिषत् ह मात परमपुरुष का विवेक के विचार मा रत हो ईर ह्या का ह स्मृत दे ओ ह
देन ॥ १३ ॥ ज्ञान शाधना त्याह वह धर राप के ॥ पुन ज्ञान शाधना विवेक मा फेरि थां हं वह धर राप के नामा

वह धर राप के ॥ तव पनिय पुरुषं पछामि ॥ १३ ॥ ज्ञान
शाधना त्याह वह धर राप के ॥ आत्म वारे दूष्यः श्रोत
यो मत्र यो निदिध्यासित येः ॥ १४ ॥ ६३ ॥

मा उपनिषत्मा कहि स्मृत क पहिले आत्मा कन सर्वत्र सा देखु ॥ उल्लेख आत्मे को मात्र विवेक म
या का वेदान्त शास्त्र ह श्रुत पुन वारम्बार उनै आत्मा को मनन गर्नु ॥ आत्मे मा निदिध्यासा
दिग रिनिश्चय हो ईर हनु ॥ अह उपाय लेहु देन हु देन ॥ १४ ॥ ६३ ॥ ६३ ॥

॥ श्री ॥
॥ वे ॥
॥ २४ ॥

नित्यानित्यविवेकम्. अवयवांस्तस्यैव सत्त्वहृत्. नित्यानित्यवस्तुकोविवेक. गरिथा
हं नित्यवस्तु कही न्दुःख. अन्तर्ज्यामि आत्मा जो कर्. सो नित्य कर्. अमृत तत्व कर्.
आत्मा देखिं व्यतिरिक्त जो जति क. सो संकरी अनित्यो नाशवाता क. भनि संकरी शास्त्रमा कही
नित्यानित्यविवेकम् ॥ एष आत्मा अन्तर्ज्यामि मृतो (उतो यद्वा तं ॥
१५ ॥ कर्. दोरे ॥ यत्र नाव्यक्त श्रुति नान्य च्छु रोति नान्य विज्ञाना
ति ॥ स भूमा न यत्रान्यत्पश्यति अन्य च्छु रोति अन्य विज्ञानाति ॥
तद्व्यं यो वेदा भूमा तदमृत यथ यद्व्यदमर्त्ये ॐ ॐ ॐ ॐ
॥ १५ ॥ कर्. दोरे ॥ पुन सो ही वाक्य सिध्यत कर्. दोरे नामा उपनिषत्मा कही न्दुःख सुत. क.
जो न पुनः आत्मा देखिं व्यतिरिक्त अर्को देव्यापनि देवेन. श्रुदापनि श्रुदेन. ज्ञादापनि ज्ञो के
ही जादैन. सो ही मात्र विवेक वडो कही यी न्दु. जो त अर्को देव क. अर्को श्रु क. अर्को मात्र ज्ञाद

॥ त ॥
॥ २४ ॥

कृपही ज्ञान रूपी आत्मा ले मारिया को कहे. सो ही मर राधर्म म आ को अन्ध पापि को म
त्यु हो १ अन्धकार मा पक्ष म निज्ञानि जन ह ले पनि क ह्या का कर ॥ १६ ॥ तद्यति ॥ तव ज

एष आत्मा पत पाप्मा वित रो मृत्यु ॥ १६ ॥ तद्यथे ह

कर्म चिन्तो लोक क्षीयते ॥ यव मे वात्र पुरा पचि

तो लोक क्षियते ॥ १७ ॥ विरक्ती गुरु स द ने मुरा

सै या हा का कर्म ले कंच य गरिया का लोक को नाश हुन्छ त्यो सबै ला र मालु

म छ त सै रिता ले पुरा पादिको कंच य गरिया का लोक को पनि नाश

वा रा छ रह दे न ॥ १७ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ २५ ॥

विरक्तीति ॥ पुनर्विरक्तजनहृत्लेतः प्रथमगुरुकाघरमाजानुपर्कमन्यायोवातमुराडु
कतामाउपनिषत्माकहीन्वृश्रुतः के कस्तागुरुभतिभनौलातः कर्मादिकाशंचयगरि

मुराडुकेपरक्षलोकात्कर्म्मचिन्ताब्रह्मरापेनिर्वेद
मायान्नास्येकतस्तनतद्विज्ञानार्थसगुरुमेवा
भिन्नदेतः ॥ १८ ॥ समित्यागि श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठ
तस्मै द्वीनुपसन्नाय सप्तकप्रज्ञानचिन्तायष
शसनिताय ॥ एताक्षरं पुरुषं वेदशैत्यं प्रोवाच

याकोलोकहृत्कानाशनिमित्तपरोक्षमयाकाभतिविरक्तः परब्रह्मसामिष्टमया ॥ त ॥
कायोग्याहोयोनगर्भाहोमन्नाज्ञानदेवि विज्ञानमयाकागुरुकानजीकजारः उस्तावठिया ॥ २५ ॥

॥ श्री ॥

॥ वे ॥

॥ २६ ॥

चित्तयसले युक्तमया काशिव्यला इति गुरुजोक्ते सोऽब्रह्मविद्या कतदिन्दुदिनुमति
पतिकहीन्दु ॥ १८ ॥ समित्यति ॥ पुनर्कोविद्यामतिमनोलातः जौतविद्याले गरि अक्षरमतिब्रह्मपुरु

तत्तत्त्वब्रह्मविद्यात् दध्यात् ॥ १९ ॥ दोहा ॥ वि
ज्ञानकोशज्ञाताज्ञाहकर्त्तामनोमयश्रु ॥
मनोमयकोशकर्त्ताज्ञाज्ञातापुनित्तीहीरे
॥ १ ॥ इति श्रीज्ञानविज्ञानवेदान्तास्य ता
ट्टीपः समप्रमः शुभमस्तु ॥ सम्वत् १९०७

षण्णैजानिन्दुः सोऽविद्याजोक्ते सोतेसाशिलाभयाकाशिव्यला इदिनुमति सकलशास्त्रले
कहीन्दुदिनुपतिवर्कतदिहुदेन ॥ १९ ॥ इति श्रीज्ञानविज्ञानवेदान्तास्य ताट्टीपः काशमाप्रमः शु
भमः इति श्रीसम्वत् १९०७ बालमिती

॥ ता ॥
॥ २६ ॥

वेदवेदान्ताद्यैर्भाष्यैः श्रुत्यामहलकीवाङ्मा ॥ गुरुशब्दवाङ्मा
लागी जागत सुहाववरीनाही ये खो शब्दाज्ञानपीलाया ॥ गुरुश
ब्दावाच्यो भाष्यः नागनाथि गुरुसयलकी जावै ॥ गगगावीचकि
देषोतमासा ॥ २ ॥

येदिधवतिक शक्तिकार्तिके नष्ट चये रविशानिकुज वारे स्वाति आ
युष्मयो जे गगनचर पशुनां स्थावर जंगवानां भवति न पवीना
स्वगुर्विनीगर्भनास्वी ॥ १ ॥